DRA Annual International Conference On
Developed India @2047: Global Pathways for Sustainable Socio- Economic, Linguistic, Science and Technological Transformation

Ind. Jr. of Mod. Res. and Rev *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 [Special Issue 1] Year 2026*

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

सतत विकास-पुनर्गठित अजमेर जिले के विशेष संन्दर्भ में

अभिषेक मिश्रा [1*], डॉ. मनोज दाधीच [2]

[1] Ph. D, Research Scholar, Paher University, Udaipur, Rajasthan, India
[2]Assistant Professor, Paher University, Udaipur, Rajasthan, India

Corresponding Author: *अभिषेक मिश्रा

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19608179

सारांश

यह शोध-पत्र पुनर्गठित अजमेर जिले के विशेष संदर्भ में सतत पर्यटन (Sustainable Tourism) की अवधारणा, संभावनाओं तथा चुनौतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि सतत पर्यटन केवल आर्थिक विकास का माध्यम नहीं है, बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन तथा स्थानीय समुदाय के सशक्तिकरण का भी महत्वपूर्ण साधन है। अजमेर जिला, जो ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध है, पर्यटन की अपार संभावनाएँ रखता है।

शोध में अजमेर के प्रमुख पर्यटन स्थलों, ग्रामीण पर्यटन, महिला-केंद्रित पर्यटन तथा इको-टूरिज्म की संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं—जैसे *PRASHAD*, स्वदेश दर्शन योजना तथा राजस्थान पर्यटन नीति—की भूमिका का भी मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन यह भी इंगित करता है कि यदि स्थानीय समुदाय की भागीदारी, पर्यावरणीय संतुलन तथा समावेशी विकास को प्राथमिकता दी जाए, तो पर्यटन क्षेत्र अजमेर जिले में रोजगार सृजन, आय वृद्धि तथा सामाजिक-सांस्कृतिक विकास का सशक्त माध्यम बन सकता है।

अंततः, शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि सतत पर्यटन मॉडल अपनाकर अजमेर जिले को एक आदर्श पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जा सकता है, जिससे दीर्घकालिक आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन सुनिश्चित किया जा सके।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 01-03-2026
- **Accepted:** 06-03-2026
- **Published:** 16-04-2026
- **MRR:**4(SP1); 2026: 76-80
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

अभिषेक मिश्रा, डॉ. मनोज दाधीच. सतत विकास-पुनर्गठित अजमेर जिले के विशेष संन्दर्भ में. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(SP1):76-80.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

मूल शब्द: सतत पर्यटन, अजमेर जिला, इको-टूरिज्म, ग्रामीण पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत, समावेशी विकास, पर्यटन नीति, पर्यावरण संरक्षण

© 2026 अभिषेक मिश्रा, डॉ. मनोज दाधीच. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

सतत विकास

जल, जंगल और जमीन से इस प्रकार वर्तमान की विकास प्रक्रिया को पूरा करना जिससे की भविष्य की पीढ़ीयों को संसाधनों की समुचित उपलब्धता सुनिश्चित रहे। वर्तमान विकास, औद्योगिकरण, आधुनिक मांग का इस प्रकार संतुलन हो की आने वाली नस्लों को एक समावेशित, विकसित, पर्यावरण अनुकुल सभ्यता और संस्कृति विरासत में मिले।

पुनर्गठित अजमेर जिले का परिचय

राजस्थान सरकार द्वारा गठित जिलों के पुनर्गठन की समिति श्री रामलुभाया समिति की अनुशंसा पर मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की सरकार द्वारा अगस्त 2023 में राजस्थान राज्य सरकार द्वारा 19 नये जिलों का गठन व 18 पुराने जिलो का पुनर्गठन किया गया। 1113 ई. में स्थापित चैहान शासक अजयराज द्वारा स्थापित अजयमेरू ही अब अगस्त 2023 से पुनर्गठित हुआ है जो कि ऐतिहासिक, पुरातात्विक, सांस्कृतिक पर्यटन की समुचे विश्व में एक जीवंत धरोहर है। यह नगर चैहान साम्राज्य की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध हुआ। अजयमेरु अपने समय में प्रशासनिक, धार्मिक और सैन्य दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नगर था।

पर्यटन: अर्थ, परिभाषा

पर्यटन शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है—परि और अटन। परि: इसका अर्थ है 'चारों ओर'। अटन, इसका अर्थ है 'घूमना'। साधारण रूप से पर्यटन का अर्थ है अपने निवास स्थान से बाहर किसी अन्य स्थान की यात्रा करना, जिसका उद्देश्य व्यापारिक लाभ के बजाय अवकाश, धार्मिक आस्था, मनोरंजन, शिक्षा या ज्ञानार्जन होता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व पर्यटन संगठन ने पर्यटन को परिभाषित करते हुए कहा है कि

''पर्यटन में व्यक्ति की ऐसे स्थानों की यात्रा और वहां रहने की गतिविधियाँ शामिल होती हैं, जो उनके सामान्य परिवेश से बाहर हों और जो अवकाश, व्यवसाय और अन्य उद्देश्यों के लिए एक वर्ष से अधिक समय तक लगातार न हो। ''

सतत पर्यटन

सतत पर्यटन वह पर्यटन अवधारणा है जिसमें स्थानीय समुदाय के आर्थिक हितों, प्रशासनिक संतुलन, सभ्यता और संस्कृति की सुरक्षा, पर्यावरण सरंक्षण को संतुलित रखते हुए, आने वाले देशी व विदेशी पर्यटको को एक समुचित, समावेशित, सुगम यादगार पर्यटन दिया जा सके। यह व्यवस्था न केवल हमारे 'अतिथि देवो भवः 'के विचार को सुदृढ़ करती है, बल्कि स्थानीय रोजगार, अर्थव्यवस्था, विदेशी मुद्रा अर्जन व साफ्ट पाॅवर के रूप में देश को विकसित भारत की ओर अग्रसर करती है।

पुर्नगठित अजमेर जिले में पर्यटन

राजस्थान के मध्य-पश्चिम में स्थित अजमेर ज़िला विविध ऐतिहासिक, धार्मिक और प्राकृतिक धरोहरों से समृद्ध है। यह ज़िला एक ओर सदियों पुरानी आध्यात्मिक परंपराओं का केंद्र रहा है तो दूसरी ओर अरावली पर्वतमाला की गोद में बसी झीलों और वन्य क्षेत्रों से प्रकृति का सौंदर्य समेटे हुए है। अजमेर शरीफ़ दरगाह और पुष्कर जैसे तीर्थ स्थलों के कारण यह क्षेत्र सर्वधर्म समभाव और सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक बन गया है। साथ ही, ग्रामीण जीवन, लोककला, हस्तशिल्प और वन्यजीव अभयारण्यों के माध्यम से यहां पर्यटन की असीम संभावनाएँ मौजूद हैं। इस शोधपरक विश्लेषण में अजमेर ज़िले के ऐतिहासिक-धार्मिक स्थलों, प्राकृतिक पर्यावरण, ग्रामीण एवं ईको-पर्यटन, पर्यटन संबंधी आँकड़ों, सरकारी योजनाओं तथा सतत् पर्यटन हेतु नीतिगत सुझावों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

ग्रामीण, महिला-केंद्रित एवं ईको-पर्यटन की संभावनाएँ

अजमेर ज़िले की ग्रामीण पृष्ठभूमि और ग्रामीण जीवनशैली भी पर्यटन का एक महत्वपूर्ण आयाम है। शहरी पर्यटन स्थलों के इतर, आसपास के गाँव प्राचीन परंपराओं, लोकसंस्कृति और आतिथ्य की झलक पेश करते हैं। ऐसे मॉडल ग्रामीण विकास और पर्यटन के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जहाँ पर्यटक कुछ नया सीखते हैं और ग्रामवासियों को आर्थिक लाभ मिलता है। इससे सामुदायिक आधारित पर्यटन को बढ़ावा मिलता है, जिसमें पर्यटन से होने वाला आर्थिक फ़ायदा स्थानीय समुदायों में विभाजित होता है और स्थानीय पर्यावरण की रक्षा भी सुनिश्चित होती है। महिला-केंद्रित पर्यटन संभावनाओं की बात करें तो अजमेर ज़िले में कई पहलें और अवसर उभर रहे हैं। पर्यटन में महिलाओं की भागीदारी न केवल लैंगिक समानता की दिशा में सकारात्मक कदम है, बल्कि यह पर्यटकों को भी एक स्थानीय परिवेश में आतिथ्य का सौम्य अनुभव प्रदान करेगा। ईको-पर्यटन (पर्यावरण के अनुकूल पर्यटन) आज की ज़रूरत है और अजमेर ज़िला इसके लिए उपयुक्त स्थानों से समृद्ध है।

पर्यटन सीज़न (अक्टूबर-मार्च) के दौरान पुष्कर व अजमेर में होटलों की अधिभोग दर (ऑक्यूपेंसी) 80-90 प्रतिशत तक पहुँच जाती है, जबकि उर्स और कार्तिक पूर्णिमा पर कभी-कभी अस्थायी तंबुओं में या आसपास के शहरों में रुकने की नौबत भी आ जाती है।

वायुसेवा की उपलब्धता ने हाल के वर्षों में अजमेर को पर्यटन दृष्टि से और सुलभ बना दिया है।

केंद्र एवं राज्य सरकार की पर्यटन योजनाएँ और पहल

अजमेर ज़िले के पर्यटन अवसंरचना को मज़बूत करने और धार्मिक-सांस्कृतिक धरोहरों के संवर्धन हेतु सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न योजनाएँ लागू की गई हैं। केंद्र सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने देशभर के प्रमुख तीर्थस्थलों के विकास के लिए PRASHAD (Pilgrimage Rejuvenation and Spiritual, Heritage Augmentation Drive) योजना 2014-15 में आरंभ की थी। अजमेर-पुष्कर इस योजना के आरंभिक चयनित स्थलों में शामिल थे। प्रसाद योजना के तहत "अजमेर-पुष्कर के समग्र विकास" नाम से एक परियोजना वर्ष 2015-16 में स्वीकृत की गई, जिसमें केन्द्रीय सहायता से तीर्थयात्रियों के लिए आधुनिक सुविधाओं का विकास किया गया। इसी प्रकार, पर्यटन मंत्रालय की स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत राजस्थान में

© 2026 अभिषेक मिश्रा, डॉ. मनोज दाधीच. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

'आध्यात्मिक पर्यटन सर्किट' विकसित करने हेतु जिन परियोजनाओं को मंज़ूरी मिली, उनमें अजमेर-पुष्कर का विकास प्रमुख है।

हृदय (HRIDAY – Heritage City Development and Augmentation Yojana) नामक केंद्र प्रायोजित योजना में भी अजमेर शहर (देश के 12 विरासत नगरों में एक) को शामिल किया गया था, जिसके अंतर्गत शहर के अंदरूनी हिस्से, चैपड़ और विरासत गलियारों का विकास किया गया। अजमेर नगर निगम ने हृदय योजना की मदद से अढ़ाई दिन के झोपड़े के पास एक हेरिटेज पार्क एवं व्याख्या केंद्र भी बनाया है। अजमेर के स्थानीय प्रशासन ने स्मार्ट सिटी मिशन के तहत भी शहर की पर्यटन सुविधाओं को उन्नत करने की पहल की हैद जैसे स्मार्ट साइनऐज, सूचना-पैनल, वाई-फ़ाई जोन, डिजिटल गाइड आदि।[1]

क्षेत्रीय संपर्क योजना (UDAN) के अंतर्गत किशनगढ़ हवाई-अड्डे का विकास पहले ही उल्लेखत है, जिसने अजमेर ज़िले को हवाई मानचित्र पर ला दिया है।

नीतिगत सुझाव व मार्गदर्शन

पर्यटन को जिम्मेदार एवं सामुदायिक आधारित स्वरूप दिया जाए, ताकि उससे होने वाले आर्थिक लाभ स्थानीय लोगों में व्यापक रूप से वितरित हों और उनका जीवनस्तर सुधरे। इसके लिए ग्रामीण पर्यटन, कृषि-पर्यटन, होम-स्टे, स्थानीय बाज़ारों को प्रोत्साहन दिया जाए। पर्यटन परियोजनाओं की योजना बनाते समय स्थानीय निवासियों/पंचायतों को शामिल किया जाए, जिससे उनके सुझाव व आवश्यकताओं का समावेश हो सके। इससे स्थानीय समुदायों में पर्यटन के प्रति स्वामित्व की भावना जागेगी और वे स्वयं पर्यटकों के स्वागत व संरक्षण में सहयोग देंगे। महिलाओं एवं वंचित वर्ग को पर्यटन से रोज़गार दिलाने के लिए विशेष प्रयास हों, जैसे महिला स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों के विपणन की व्यवस्था, उन्हें गाइड/होम-स्टे ऑपरेटर के रूप में प्रशिक्षित करना इत्यादि। समुदाय आधारित पर्यटन से रोज़गार सृजन के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण भी सुचारु रूप से होता है, क्योंकि स्थानीय लोग अपने परिवेश को संरक्षित रखने में रुचि लेते हैं।

ईको-पर्यटन (पारिस्थितिकी पर्यटन)

विविध भू-भागों और प्राकृतिक स्थलों वाला राजस्थान राज्य पारिस्थितिक पर्यटन की दृष्टि से भी अहम है। अजमेर ज़िले में यद्यपि अधिकतर लोग धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन हेतु आते हैं, फिर भी यहाँ कुछ ऐसे प्राकृतिक स्थल हैं जिन्हें ईको-पर्यटन के रूप में विकसित किया जा रहा है। ईको-टूरिज़्म का तात्पर्य पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का इस प्रकार पर्यटन करना है जिससे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण हो तथा स्थानीय समुदाय को लाभ पहुँचे।

समावेशी विकास में पर्यटन की भूमिका

पर्यटन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह अर्थव्यवस्था के बहुसंख्यक क्षेत्रों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करता है तथा समावेशी विकास को गति दे सकता है। अजमेर जैसे पर्यटन-प्रधान जिले में यह प्रभाव और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहाँ पर्यटन से मिलने वाले लाभ समाज के प्रत्येक तबके तक पहुँचना वांछनीय है। समावेशी विकास का अभिप्राय है विकास के फल सभी समुदाय-विशेषकर हाशिये पर खड़े समूहों, महिलाओं, युवाओं, ग्रामीण आबादी तक समान रूप से पहुँचे। पर्यटन क्षेत्र कुछ ऐसी विशिष्ट संभावनाएँ प्रदान करता है जिससे यह लक्ष्य पाया जा सकता है-

रोज़गार और आय में वृद्धि: पर्यटन श्रम-गहन उद्योग है और इसमें कम कुशल से लेकर उच्च कुशल सभी स्तरों पर रोज़गार के अवसर सृजित होते हैं। अजमेर ज़िले में पर्यटन ने परिवहन (ड्राइवर, कुली), आवास (होटल स्टाफ, गेस्ट-हाउस प्रबंधक), भोजनालय (रसोइया, वेटर), मार्गदर्शन (टूर गाइड), दुकानदारी आदि क्षेत्रों में हज़ारों लोगों को सीधा रोजगार दिया है। साथ ही निर्माण, कृषि, हस्तशिल्प जैसे संबद्ध क्षेत्रों में भी पर्यटन से मांग बढ़ने पर अप्रत्यक्ष रोज़गार पैदा होता है।

राजस्थान पर्यटन नीति 2020 एवं 2025: राज्य ने 5 वर्षों बाद नई पर्यटन नीति 2020 में जारी की, जिसे हाल ही में अद्यतन कर 2025 तक का रोडमैप घोषित किया गया। इस नीति के प्रमुख बिंदु हैंद पर्यटन का विविधीकरण (यानी केवल महल-किले नहीं, बल्कि ग्रामीण, साहसिक, पर्यावरण, खान-पान, त्यौहार सभी किस्म के उत्पाद विकसित करना); सतत एवं समावेशी पर्यटन (सभी वर्गों की भागीदारी और लाभ सुनिश्चित करना, पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखना); निवेश प्रोत्साहन (नए पर्यटन व्यवसायों के लिए रियायतें, विशेष पर्यटन क्षेत्र घोषित करना) तथा स्थानीय कला-शिल्प व विरासत का संर्वधन।

सरकारी योजनाएँ और उनकी उपयोगिता

केन्द्रीय एवं राज्य सरकार की योजनाएँ पर्यटन को बढ़ावा देने में सहायक हैं। उदाहरणस्वरूप, केंद्र की स्वदेश दर्शन योजना के तहत राजस्थान में "पुष्कर/अजमेर के एकीकृत विकास" हेतु रु. 32.64 करोड़ की परियोजनाएँ स्वीकृत हुई थीं। इससे सुविधाएँ, पहाड़ी दृश्यों के अवलोकन बिंदु और सांस्कृतिक गतिविधियों का विकास हुआ होगा। राज्य की राजस्थान पर्यटन नीति 2020 ने ग्रामीण क्षेत्रों पर विशेष फोकस रखते हुए इंफ्रास्ट्रक्चर और कनेक्टिविटी को मज़बूत करने पर बल दिया है। इसमें ग्रामीण पर्यटन को प्रोत्साहन, स्थानीय हस्तशिल्प व व्यंजनों को पर्यटन पैकेज में शामिल करने और कोविड-19 के बाद उद्यमों के लिए टैक्स छूट जैसे प्रावधान हैं। इसके अलावा प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) जैसी योजनाएँ सूक्ष्म, लघु और कुटीर उद्योगों को ऋण सहायता दे रही हैं, जिससे ग्रामीण महिला-उद्यमियों और कारीगरों को अपने पर्यटन संबंधी व्यवसाय (जैसे होमस्टे, हस्तशिल्प इकाइयाँ) स्थापित करने में मदद मिलती है। इन योजनाओं का सम्मिलित रूप से उपयोग करने से स्थानीय लोगों को उद्यमिता एवं स्वरोजगार के अवसर मिलेंगे।[2]

CSR, PPP एवं स्थानीय संस्थागत साझेदारी

पर्यटन इकाई विकास में CSR और PPP मॉडल निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं। राजस्थान पर्यटन नीति स्वयं साफ-सफाई, पेयजल, शौचालय आदि सुविधाओं के लिए CSR और PPP संसाधनों को आकर्षित करने पर ज़ोर देती है। उदाहरणस्वरूप, CSR के माध्यम से सांस्कृतिक महोत्सवों का आयोजन, आधुनिकीकरण परियोजनाओं के लिए फंडिंग या पर्यटक सूचना केंद्रों की स्थापना कराई जा सकती है।

© 2026 अभिषेक मिश्रा, डॉ. मनोज दाधीच. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

PPP मोड में निजी निवेशकों को सुंदर पर्यटन स्थलों पर होमस्टे, रेस्तरां, क्रूज़, एडवेंचर स्पोर्ट्स इत्यादि के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। स्थानीय पंचायत-नगर परिषद भी निर्णय प्रक्रिया में शामिल होकर स्मारक सुरक्षा, मेलों-उत्सवों का आयोजन और गांव पर्यटन प्रबंध समितियाँ बना सकती हैं। कुल मिलाकर, सरकारी संसाधन के साथ CSR, PPP और पंचायत स्तर की भागीदारी एक समन्वित प्रयास बनाकर पर्यटन सुविधाओं में व्यापक सुधार ला सकती है।[3]

प्रमुख बाधाएँ एवं उनके समाधान

राज्य के अनुभवों और नीतिगत विश्लेषणों के अनुसार, अजमेर में प्रमुख चुनौतियाँ आधारभूत संरचना, प्रशिक्षण एवं जनजागरूकता की हैं। हालांकि दिल्ली-जयपुर एक्सप्रेसवे आदि नए मार्गों के कारण राज्यभर में सुगम कनेक्टिविटी आई है, ग्रामीण व हिलटॉप पर्यटक स्थल अभी भी सुदूर हैं। अतः सड़क सुधार, परिवहन सुविधाएँ और संकेत व्यवस्था में निवेश जरूरी है। प्रौद्योगिकी से जुड़ाव के लिए बेहतर मोबाइल/इंटरनेट नेटवर्किंग और ऑनलाइन बुकिंग प्रणाली विकसित करनी चाहिए। इसके साथ ही हॉस्पिटैलिटी में कौशल प्रशिक्षण भी आवश्यक है; सरकार पहले से गाइड-प्रशिक्षण और स्किल डेवलपमेंट पर काम कर रही है, जिसे स्थानीय स्तर पर महिला एवं युवक प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से बढ़ावा दिया जा सकता है। जागरूकता के अभाव को दूर करने हेतु स्थानीय भाषा में मीडिया, सोशल मीडिया और स्कूल-ग्रामीण कार्यशालाओं से पर्यटन एवं उसके लाभों की जानकारी फैलायी जानी चाहिए। इन उपायों से पूर्वाग्रह तोड़कर समुदाय को पर्यटन विकास का साझेदार बनाया जा सकता है।469

दीर्घकालिक एवं लघुकालिक रणनीतियाँ

लघु अवधि में, चुनिंदा स्थलों पर सुविधाएँ दुरुस्त करने और आयोजन शुरू करने पर ध्यान दें; उदाहरणतः स्थानीय फैशन, खानपान, हस्तशिल्प मेलों का संचालन, ग्राम-पर्यटन उत्सव, विशेष पर्यटन पैकेज आदि। साथ ही पर्यटक सूचना संकेतक, शौचालय, प्राथमिक चिकित्सा कक्ष जैसी बुनियादी सुविधाएं शीघ्र उपलब्ध कराएं। दीर्घकालिक रणनीतियाँ में बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट और सतत् योजना शामिल हों। नीति-निर्माण के निर्देशों में पर्यटक स्थलों के संरक्षण के लिए विनियम, स्थानीय उद्यमिता के लिए वित्तीय प्रोत्साहन, महिलाओं व युवाओं के लिए स्टार्ट-अप कोष और पर्यटन इकाई नीति जैसे खंड शामिल किए जाने चाहिए। उदाहरणस्वरूप, राज्य की आने वाली पर्यटन नीति में अभी तक ग्रामीण पर्यटन इकाइयों एवं कृषि-पर्यटन को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसी प्रकार स्थानीय संस्थाओं, नागरिक समाज और विश्लेषकों की भागीदारी से रणनीतिक रोडमैप तैयार करना लाभप्रद होगा।469

पर्यटन विकास का समग्र प्रभाव

पर्यटन के विस्तार का प्रभाव आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय पक्षों पर पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से, टिकाऊ पर्यटन नई नौकरियाँ, महिला-केंद्रित उद्यम और ग्रामीण आय में वृद्धि करेगा। उदाहरणतः स्थानीय होमस्टे, रेस्तरां और गाइड-सर्विस रोजगार बढ़ाएंगे। सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से, यह स्थानीय शिल्पों, लोककला और परंपराओं को संरक्षित करते हुए गर्व एवं सौहार्द बढ़ाएगा। इससे शिक्षा तथा कौशल विकास के अवसर भी बढ़ेंगे (जैसे स्थानीय कलाकारों को न्छम्ैब्व्-पाठ्यक्रम के तहत प्रशिक्षित करना)। पर्यावरणीय दृष्टि से सतत् पर्यटन मॉडल से स्थानीय जैवविविधता को संरक्षित करने, स्वच्छता अभियान (स्वच्छ भारत पहल) और प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा मिलेगा। हालांकि, बड़े पर्यटक प्रवाह से प्रदूषण एवं संसाधन तनाव की आशंका भी रहती है, इसलिए स्वच्छता, कचरा प्रबंधन और पानी की बचत जैसे उपायों को प्राथमिकता देनी होगी। यदि समेकित योजना के तहत विकास किया जाए, तो अजमेर जिले में पर्यटन न केवल आर्थिक समृद्धि बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक उन्नति और पर्यावरणीय जागरूकता को भी बढ़ावा देगा, जिससे "समग्र आर्थिक-सामाजिक विकास (सर्वधन)" की दिशा में ठोस प्रगति होगी।469

निष्कर्ष

अजमेर जिले की सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक विरासत और धार्मिक समरसता ने इसे राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों में एक विशिष्ट स्थान प्रदान किया है। पुनर्गठन के बाद जिले की भौगोलिक एवं प्रशासनिक संरचना में आए परिवर्तन ने न केवल पर्यटन की भौगोलिक सीमाओं का विस्तार किया है, बल्कि ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों तक विकास की संभावनाओं को भी जन्म दिया है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यदि स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी, सतत पर्यावरणीय दृष्टिकोण और समावेशी नीतिगत पहलुओं को प्राथमिकता दी जाए, तो अजमेर जिले में पर्यटन केवल आर्थिक समृद्धि का ही नहीं, अपितु सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का भी माध्यम बन सकता है। ईको-टूरिज्म, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन, महिला-सशक्तिकरण और युवा सहभागिता जैसे क्षेत्रों में ध्यान केंद्रित कर, अजमेर को एक आदर्श सर्वधन मॉडल में परिवर्तित किया जा सकता है। आम नागरिकों में पर्यटन क्षेत्रों, स्थलों, सार्वजनिक विरासतों, सार्वजनिक परिवहन के प्रति सम्मान, साफ-सफाई, सरंक्षण की भावना विकसित हो। आने वाले देशी व विदेशी पर्यटकों को सुरक्षा मुहैया करवाई जाये, उन्हें एक धन का स्त्रोत ना समझकर हमारी संस्कृति व सभ्यता का वाहक समझा जाये और हमारी पुरातनकालीन 'अतिथि देवो भवः' की विचारधारा को वर्तमान युग में समावेशित किया जाये, जिससे विकसित भारत के स्वप्न को साकार किया जा सके।

अगर हम वर्तमान को भविष्य की नजर से देखे तो सतत विकास एक प्रकार से नींव का पत्थर है जिस पर आने वाला विकास टिका हुआ है इसलिए चाहे संस्कृति सरंक्षण, विरासत को सहेजना, हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना हमे जागरूक होकर पर्यावरण, संस्कृति और अर्थव्यवस्था को संतुलन देना होगा जिससे कि सतत विकास धारणा धरातल पर चरितार्थ हो सके।

संदर्भ सूची

1. Government of India, Ministry of Tourism. PRASHAD Scheme: Guidelines and Implementation Framework. New Delhi: Government of India; 2015.

© 2026 अभिषेक मिश्रा, डॉ. मनोज दाधीच. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2. Government of Rajasthan. Rajasthan Tourism Policy 2020. Jaipur: Department of Tourism, Government of Rajasthan; 2020.
3. United Nations World Tourism Organisation (UNWTO). Sustainable Tourism for Development Guidebook. Madrid: UNWTO; 2013.
4. Ministry of Tourism, Government of India. Swadesh Darshan Scheme: Integrated Development of Theme-Based Tourist Circuits. New Delhi: Government of India; 2017.
5. Sharma K, Singh R. Sustainable tourism development in Rajasthan: Issues and prospects. Indian J Tourism Hosp Manag. 2019;13(2):45–52.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

Disclaimer: The views, opinions, statements, and conclusions expressed in the papers, abstracts, presentations, and other scholarly contributions included in this conference are solely those of the respective authors. The organisers and publisher shall not be held responsible for any loss, harm, damage, or consequences — direct or indirect — arising from the use, application, or interpretation of any information, data, or findings published or presented in this conference. All responsibility for the originality, authenticity, ethical compliance, and correctness of the content lies entirely with the respective authors.

© 2026 अभिषेक मिश्रा, डॉ. मनोज दाधीच. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/